आफ पाकिस्तान', 'कल्चरल हिस्ट्री आफ भारत' में कुछ अन्तर है क्या? ऐसी कई बातें हमको ध्यान में आयेंगी और इसलिए केवल राज्यों में परिवर्तन हुआ। दो राज्य अलग-अलग बन गये। यह एक राजनीतिक राष्ट्रवाद तो कह सकते हैं परन्तु क्या सांस्कृतिक दृष्टि से अलग हुए क्या? अलग होना संभव है क्या? और इसलिए कभी-कभी लगता है कि इन संकल्पनाओं को बहुत बड़ी मात्रा में स्पष्ट होने की आवश्यकता है। और राष्ट्र संकल्पना भी क्या है?

विश्व के कुछ चिन्तकों ने कहा कि राष्ट्र एक नकारात्मक कल्पना है। ये कैसे उनको लगा तो राष्ट्र कहने से एक प्रखरतावाद एवं अलगाववाद का भाव निर्माण होता है। हमारी सीमाएं, हमारे जहन में कट्टरता का जन्म होता है। इस भूमि पर, इस सीमा में रहने वाले अपने आपको कट्टर मानते हैं। दूसरों के प्रति असहिष्णुता का भाव निर्माण होता है। उस भूमि में रहने वाले जो अल्पसंख्यक माने जाते हैं उन पर अन्याय, अत्याचार करने का जाने-अनजाने में अधिकार प्राप्त होता है। और स्वाभाविक रूप से साम्राज्यवादी सोच, विस्तारवादी सोच, विकसित होती है। ये लोगों ने देखा है और ये सारी बातें जो हुई, वह राष्ट्र को लेकर हुई, राष्ट्र के नाम से हुई और इसलिए कुछ लोगों को लगा कि राष्ट्र की संकल्पना नकारात्मक है, युद्ध की तरफ ले जाने वाली है, संकुचित है, कट्टरता का भाव निर्माण करती है, असहिष्णुता का भाव निर्माण करती है।

इसके विपरीत भारतीय मनीषियों ने कहा कि यह अत्यन्त सकारात्मक है। हजारों वर्षों से अगर हम भारत के सन्दर्भ में देखते हैं तो भारत की राष्ट्र की कल्पना कभी नकारात्मक नहीं रही, सकारात्मक रही। हमारी संस्कृति ने, हमारे पूर्वजों ने, कभी भी इस राष्ट्र के नाम पर, कभी भी राज्य के विस्तार की कल्पना नहीं की। पूरा इतिहास निकालकर देखिए कि हमारे यहां से कोई भी सेना लेकर दूसरों की भूमि पर आक्रमण करने के लिए नहीं गया, एक भी ऐसी घटना हमको नहीं मिलती। छोटी-मोटी लड़ाईयां होती रही हैं। लड़ाईयां हुई तो आत्मरक्षा के लिए हुई। आक्रमण के लिए नहीं। परन्तु हम दुनियां में नहीं गये, ऐसा भी नहीं है। अपने पूर्वज, अपने मनीषी, अपने ऋषि-मुनि दुनिया के कोने-कोने में गये और वह एक सकारात्मक विचार, एक सांस्कृतिक सोच लेकर गये, जीवन-दृष्टि लेकर गये। यहां से कोई भी लेने के लिए गया, अपने इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं है। हम देने के लिए जाते हैं। तो भारत की राष्ट्र की संकल्पना में एक